हुनरमन्द कहानी सुनाने वाले कैसे बनें

राजेश उत्साही

हम सभी, ख़ासतौर पर बच्चों, को कहानियाँ सुनना पसन्द है। मैं जब अपने बचपन को याद करता हूँ, तो मुझे दादी-नानी की कहानियाँ याद आती हैं। सर्दियों के मौसम में हमारे घर में गर्माहट के लिए सिगड़ी जलाई जाती थी। आग तापने के लिए हम सभी बच्चे देर रात तक सिगड़ी के आस-पास बैठे रहते थे। गर्मियों के मौसम में घर के आँगन में बिछी चारपाइयों पर इकट्ठे होते थे। यही वह समय होता था जब दादी-नानी हमें कहानियाँ सुनाया करती थीं। उन्हें कहानियाँ याद भी ख़ूब रहा करती थीं। कहानी सुनते-सुनते अगर नींद आ जाती और कहानी अधूरी रह जाती थी, तो अगले दिन इसे फिर से सुनाने की फ़रमाइश करते थे। यह वह समय था जब टीवी नहीं था। मोबाइल फ़ोन तो दूर की बात है; लैंडलाइन फ़ोन भी आमतौर पर सभी घरों में नहीं होता था।

लेकिन, पिछले कुछ सालों में पूरा परिदृश्य ही बदल गया है। यहाँ तक कि नियमित टीवी कार्यक्रमों की जगह ओटीटी प्लेटफार्म ने ले ली है। अब तो शायद दादी-नानी भी मोबाइल या टीवी के माध्यम से ही कहानियाँ सुना रही हैं। ऐसे तमाम चैनल, ब्लॉग और वेबसाइट हैं जहाँ वीडियो, पॉडकास्ट और ऑडियो कहानियाँ मिल सकती हैं।

इन दिनों मैं अपनी ढाई साल की पोती वान्या के साथ हूँ। यूट्यूब पर वह ऐसी तमाम कहानियों और कविताओं को सुनती और देखती है, जो ख़ासतौर पर बच्चों के लिए तैयार की गई हैं। वह अपनी पसन्द और नापसन्द भी ज़ाहिर करती है।

सुनाने का महत्त्व

घरों में बच्चों को मोबाइल फ़ोन आसानी से उपलब्ध हैं, इस कारण कहानियाँ पढ़ने या सुनाने की अनुकूल परिस्थिति नहीं बन पाती है। हालाँकि इस परिदृश्य में भी, स्कूल में कहानी सुनाने का महत्त्व अब भी बना हुआ है। कहानी सुनाने की कला कक्षाओं में एक उपयोगी साधन (टूल) के रूप में लोकप्रिय हो रही है। कहानी सुनाना अपने आप में एक विशेषज्ञता भी बन गई है। अब पेशेवर कहानी सुनाने वाले (storytellers) भी होने लगे हैं जो स्कूलों में इसके विशेष सत्र लेते हैं। प्रख्यात शिक्षाविद कृष्णकुमार ने कहानी सुनाने की महत्ता पर अपने एक निबन्ध में लिखा है, अगर हमारे प्राथमिक विद्यालयों में रोज़ाना पहले दो पीरियड सिर्फ़ कहानी सुनाने के हों तो बच्चों को स्कूल में टिकाए रखने की समस्या कम-से-कम एक हद तक सुलझ सकती है। आगे वे कहते हैं कि मेरे मन में एक ऐसे दिन की कल्पना है जब छोटे बच्चों को पढ़ाने वाले हर शिक्षक से यह अपेक्षा की जाएगी कि कम-से-कम 30 पारम्परिक कहानियों पर उनकी महारत हो। महारत से मेरा आशय है कि ये कहानियाँ उन्हें अच्छी तरह से याद हों, ताकि वह उन्हें इत्मीनान और आत्मविश्वास के साथ सुना सकें। वे आगे कहते हैं कि यह एक ऐसे समाज के लिए कोई बड़ी या मुश्किल बात नहीं है जिसके पास हज़ारों कहानियों की विरासत है। 30 ऐसी कहानियाँ जिन्हें अध्यापक अपनी मर्ज़ी से जब चाहे सुना सके, जो प्राथमिक कक्षाओं के पहले दो पीरियड का माहौल बदलकर रख देंगी। शर्त इतनी भर है कि दैनिक पाठ्यक्रम में कहानी सुनाने को एक सम्मानजनक जगह इस ख़ातिर दी जाए कि कहानी सुनाना अपने आप में महत्त्वपूर्ण है।

बुनियादी चरण के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 में भी इस पर ज़ोर दिया गया है।

> "कहानियाँ बच्चों के लिए दुनिया को जानने की खिड़की होती हैं। वे आकर्षक, सुन्दर, करामाती होती हैं! कहानियाँ सुनने में बहुत मज़ा आता है और ख़ासकर छोटे बच्चे उन्हें सुनना पसन्द करते हैं। भावनाओं के साथ, भाव-भंगिमा और जीवन्त अभिव्यक्ति के साथ सुनाई गई कहानियाँ जादुई होती हैं और आपकी साँसें थामे रखती हैं। हर शब्द अपने आप में एक अनुभव बन जाता है।
>
> कहानियाँ विशेष रूप से सामाजिक सम्बन्धों और नैतिक विकल्पों को सीखने, भावनाओं को समझने व अनुभव करने और जीवन कौशल के बारे में जागरूक होने के लिए एक अच्छा माध्यम हैं। कहानियाँ सुनते समय बच्चे नए शब्द सीखते हैं जिससे उनकी शब्दावली विस्तृत होती है और साथ ही वे वाक्य संरचना एवं समस्या सुलझाने के कौशल भी सीखते हैं। जो बच्चे बहुत ज़्यादा वक़्त तक एक जगह ध्यान नहीं लगा पाते हैं, वे भी कहानी में लम्बे समय तक तल्लीन होने लगते हैं। सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक कहानियों के ज़रिए हम बच्चों को उनकी संस्कृति, सामाजिक मानदण्डों से परिचित करा सकते हैं और उनके परिवेश के बारे में जागरूकता पैदा कर सकते हैं।"

कक्षा में कहानी सुनाने का उपयोग

शिक्षाशास्त्र के रूप में कहानी सुनाने का उपयोग अमूमन पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं के बच्चे के लिए किया जाता है, जिन्होंने अभी स्वयं से पढ़ना नहीं सीखा है या पढ़ना सीख रहे हैं। हालाँकि श्रोता ऐसे भी हो सकते हैं जिन्हें पढ़ना तो आता है पर पढ़ने में कोई रुचि नहीं है।

अगर आप शिक्षक हैं, (या अभिभावक हैं या शौक़िया रूप से कहानी सुनाने की कला में माहिर होना चाहते हैं) तो आपको कुछ बातों का ध्यान रखना होगा। सबसे पहले यह तय करना होगा कि कहानी क्यों सुनाई जा रही है, उसका उद्देश्य क्या है। मोटेतौर पर निम्न उद्देश्य हो सकते हैं -

- बच्चों को बहलाना।
- बच्चों में कहानी के प्रति रुचि जगाना।
- बच्चों में पढ़ने के प्रति रुचि जगाना।
- किसी अवधारणा विशेष या मूल्यों को बच्चों तक पहुँचाना।
- बातचीत करने में बच्चों की झिझक तोड़ना।
- बच्चे कहानी के बहाने सवाल पूछने, चर्चा में भाग लेने के लिए आगे आएँ।
- बच्चों में कल्पनाशीलता, दृश्यनिर्माण को बढ़ावा देना।
- अपनी समस्या को सामने रखने के लिए कौशल विकसित करना।

कहानी कहाँ से मिल सकती है?

आप कहानी कहीं से भी ले सकते हैं। हालाँकि, आपका उद्देश्य भी इस बात को निर्धारित करेगा कि कहानी कहाँ से लें। सबसे बेहतर स्रोत हैं हमारी पारम्परिक कहानियाँ। इनमें लोककथाओं का स्रोत सबसे बड़ा है। लोककथा की एक ख़ासियत यह है कि यह परिवेश और संस्कृति के हिसाब से यात्रा करती हुई अपना रूप बदलती रहती है, लेकिन उसका मूल कथ्य वही बना रहता है। इस कारण से यह याद भी जल्दी होती है और किसी बँधे-बँधाए ढर्रे में नहीं चलती है। पंचतंत्र, जातक कथाएँ जैसे स्रोत भी उपयोगी होंगे। बहरहाल महत्त्वपूर्ण यह भी है कि आप क्या नहीं चुनें। किसी का मज़ाक उड़ाने वाली, नैतिक शिक्षाओं से भरी, भूत-प्रेत और अन्धविश्वास को बढ़ावा देने वाली, संवैधानिक मूल्यों की अवहेलना करने वाली कहानियों से बचें। कहानी की भाषा सरल, सहज और सम्प्रेषणीय हो। शब्द ऐसे हों, जो उनके परिवेश के हों,उच्चारण करने में आसान हों।

शुरुआत कैसे करें

- शुरुआत करने के लिए आपको जो भी कहानी याद हो, आपने किसी से सुनी हो, कहीं पढ़ी हो, उसका प्रयोग करें। उस पर बच्चों की प्रतिक्रिया देखें। उस प्रतिक्रिया के आधार पर आप अगली कहानी सोच सकते हैं।
- आप किसी किताब या पत्रिका में छपी कहानी भी सुना सकते हैं।
- बच्चों से पूछें। यदि उन्हें कोई कहानी याद हो तो वे भी उसे सुना सकते हैं।
- शुरुआत इस तरह भी हो सकती है कि बच्चों से पूछा जाए घर से स्कूल आते वक़्त उन्होंने रास्ते में क्या देखा। या कि उनके साथ पिछले दिन ऐसा क्या घटा जिसे वे औरों को बताना चाहते हैं। यह गतिविधि बच्चों में अभिव्यक्ति के कौशल को विकसित करने में मदद करेगी।

अभ्यास निपुण बनाता है

कहानी सुनाना वास्तव में एक कला है। उसमें आप धीरे-धीरे पारंगत हो सकते हैं। आप कहानी सुनाते हुए अपनी आवाज़ में उतार-चढ़ाव ला सकते हैं। पात्रों के अनुरूप अपनी आवाज़ को बदल सकते हैं। अपने चेहरे की भाव-भंगिमाएँ बना सकते हैं। और अगर कक्षा में या जहाँ आप कहानी सुना रहे हैं, जगह है तो आप चलते या घूमते हुए भी अपनी कहानी सुना सकते हैं। ध्यान रखें कि ऐसी कोई भंगिमा न बनाएँ या आवाज़ न निकालें जो बच्चों में डर पैदा करे। अगर कहानी रोचक होगी तो बच्चे ध्यानपूर्वक सुन रहे होंगे। अगर बच्चों का ध्यान कहानी सुनने में नहीं है तो आपको सोचना होगा कि क्या नया किया जाए। एक तरीक़ा यह है कि कहानी कुछ इस तरह सुनाएँ कि उसमें बच्चों से संवाद का मौक़ा भी निकल आए। कहानी में जो होने वाला है या हो सकता है, उसके बारे में बच्चों को सोचने के लिए कहें। दूसरा तरीक़ा है कहानी को उनके परिवेश से जोड़ें, उनकी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी से जोड़ें।

कुछ कहानियाँ ऐसी होंगी, जिन्हें बच्चे बार-बार सुनना चाहेंगे। ऐसी कहानियाँ सुनाने में आपको भी आसानी होगी। आपके पास मौक़ा होगा कि आप कहानी को हर बार नए अन्दाज़ से सुना सकते हैं। उसमें नए पहलू और प्रसंग भी जोड़ सकते हैं। इस सन्दर्भ में मैं एक निजी अनुभव का ज़िक्र करना चाहूँगा। मेरे दो बेटे हैं। जब वे छोटे थे तो मेरे पिता उन्हें कहानी ख़ुद बनाकर सुनाते थे। उन्होंने लाट साहब नाम का एक चरित्र गढ़ा था। वे हर बार उसका कोई नया कारनामा बनाकर सुनाते थे। इसमें भी मज़े की बात यह थी कि बीच-बीच में उनके श्रोता यानी मेरे बेटे स्वयं भी इसमें कुछ-न-कुछ जोड़ देते थे। यानी वे भी लाट साहब के चरित्र के अनुरूप कल्पना करने लगते थे। आप भी बच्चों को ऐसे अवसर दे सकते हैं।

इसके अलावा एक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हर कहानी का अमूमन एक तय अन्त होता है। यह ज़रूरी नहीं है कि आप उस अन्त पर अडिग रहें। आप उस अन्त को न बताकर बच्चों के सामने एक सवाल के रूप में छोड़ सकते हैं। या बच्चों से उसके एक से अधिक अन्त सोचने के लिए कह सकते हैं। और यह भी तत्काल न करके, उन्हें कुछ समय देकर या अगले दिन सोचकर आने के लिए कह सकते हैं। इस कहानी से क्या शिक्षा मिलती है या यह कहानी हमें क्या सिखाती है जैसे जुमलों से परहेज़ किया जाना चाहिए। अगर कहानी में ऐसा कुछ है भी तो बच्चों को उसे ख़ुद ही आत्मसात करने का मौक़ा दें।

जब आप कहानी सुनाना शुरू करेंगे तो उस पर बच्चों की प्रतिक्रिया ही आपको ऐसे सुराग़ देगी कि अगली बार कैसी कहानी चुनें। अच्छी कहानियाँ चुनने के लिए कहानियाँ पढ़ते रहना भी ज़रूरी होगा। बहरहाल यह कुछ प्रारम्भिक बातें हैं। एक हुनरमन्द कहानी सुनाने वाला बनने के लिए निरन्तर अभ्यास और नए तरीक़े आज़माने और सीखने की ज़रूरत होगी।



राजेश उत्साही अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के 'अनुवाद पहल' में वरिष्ठ हिन्दी सम्पादक हैं। वे विश्वविद्यालय की पत्रिकाओं *लर्निंग कर्व* और *आई वंडर...* के हिन्दी-अनुवादित संस्करणों का सम्पादन करते हैं। लगभग 12 वर्षों तक अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन के 'टीचर्स ऑफ़ इंडिया' पोर्टल के हिन्दी सम्पादक रहे हैं। इससे पहले क़रीब 27 साल तक *एकलव्य* के साथ विभिन्न भूमिकाओं में काम कर चुके हैं, जिसमें 17 वर्षों तक बाल विज्ञान पत्रिका *चकमक* का सम्पादन भी शामिल है। उनसे *utsahi@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : अफ़साना पठान **पुनरीक्षण :** प्रतिका गुप्ता **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

शिक्षकों को उनके क्षेत्र-विशेष से कहानियाँ साझा करनी चाहिए। ऐसी और कहानियों के लिए वे शिक्षार्थियों से कह सकते हैं कि वे अपने पालकों से उनके क्षेत्र-विशेष की कहानियाँ सुनाने के लिए कहें। परिवारों में कहानी सुनाने के रिवाज़ों को पहचाना जाना चाहिए और प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, इससे पहले कि वे पूरी तरह ख़त्म हो जाएँ। अच्छे साहित्य से रूबरू होने की कमी से पड़ी दरार बदक़िस्मती से 'ख़बरी क़िस्सों' से भरी जा रही है जिसकी बमबारी टीवी और फ़ोन के ज़रिए हम पर लगातार हो रही है।

- वैलेंटीना त्रिवेदी, कहानियाँ कैसे बच्चों का लालन-पालन करती हैं, पेज 1